This question paper contains 7 printed pages]

आपका अनुक्रमांक.........................

6159

B.A. (Hons.) बी.ए.(ऑनर्स)/II E

HINDI—Paper IV

हिंदी–प्रश्नपत्र IV

(हिंदी गद्य साहित्य)

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

1. निम्नलिखित गद्यांशों की व्याख्या कीजिए : 7×3=21

(क) समस्त मानव–जीवन के प्रवर्त्तक भाव या मनोविकार ही होते हैं । मनुष्य की प्रवृत्तियों की तह में अनेक प्रकार के भाव ही प्रेरक के रूप में पाए जाते हैं । शील या चरित्र का मूल भी भावों के विशेष प्रकार के संघटन

P.T.O.

में ही समझना चाहिए । लोक-रक्षा और लोक-रंजन की सारी व्यवस्था का ढाँचा इन्हीं पर ठहराया गया है । धर्म-शासन, राज-शासन, मत-शासन--सबमें इनसे पूरा काम लिया गया है । इनका सदुपयोग भी हुआ है और दुरुपयोग भी । जिस प्रकार लोक-कल्याण के व्यापक उद्देश्य की सिद्धि के लिए मनुष्य के मनोविकार काम में लाए गए हैं उसी प्रकार किसी सम्प्रदाय या संस्था के संकुचित और परिमित विधान की सफलता के लिए भी ।

अथवा

कितनी अयोध्याएँ बसीं, उजड़ीं पर निर्वासित राम की असली राजधानी, जंगल का रास्ता अपने काँटों-कुशों, कंकड़ों-पत्थरों की वैसी ही ताजा चुभन लिए हुए बरकरार है, क्योंकि जिनका आसरा साधारण गँवार आदमी भी लगा सकता है, वे राम तो सदा निर्वासित ही रहेंगे और उनके

राजपाट को सँभालने वाले भरत अयोध्या के समीप रहते हुए भी उनसे भी अधिक निर्वासित रहेंगे, निर्वासित ही नहीं, बल्कि एक कालकोठरी में बंद जिलावतनी की तरह दिन बिताएँगे ।

(ख) यह रहस्य मानव-हृदय का है, मेरा नहीं । राजकुमार, नियमों से यदि मानव-हृदय बाध्य होता, तो आज मगध के राजकुमार का हृदय किसी राजकुमारी की ओर न खिंचकर एक कृषक-बालिका का अपमान करने न आता । मधूलिका उठ खड़ी हुई । चोट खाकर राजकुमार लौट पड़ा । किशोर किरणों में उसका रत्न-किरीट चमक उठा । अश्व वेग में चला जा रहा था और मधूलिका निष्ठुर प्रहार करके स्वयं आहत न हुई ? उसके हृदय में टीस सी होने लगी । वह सजल नेत्रों से उड़ती हुई धूल देखने लगी ।

अथवा

खचाखच भरे प्लेटफार्म पर शायद इसी बात की चर्चा चल रही थी कि पीछे क्या हुआ है । प्लेटफार्म पर खड़े दो-तीन खोमचे वालों पर मुसाफिर टूटे पड़ रहे थे । सभी को सहसा भूख और प्यास परेशान करने लगी थी । इसी दौरान तीन-चार पठान हमारे डिब्बे के बाहर प्रगट हो गए और खिड़की से झाँक-झाँक कर अन्दर देखने लगे । अपने पठान साथियों पर नजर पड़ते ही वे उनसे पश्तो में कुछ बोलने लगे । मैंने घूमकर देखा, बाबू डिब्बे में नहीं था । मेरा माथा ठनका । गुस्से से वह पागल हुआ जा रहा था । न जाने क्या कर बैठे । पर इसी बीच डिब्बे के तीनों पठान अपनी गठरी उठाकर बाहर निकल गए और अपने पठान साथियों के साथ गाड़ी के अगले किसी डिब्बे की ओर बढ़ गए । जो विभाजन पहले प्रत्येक डिब्बे के भीतर होता रहा था, अब सारी गाड़ी के स्तर पर होने लगा था ।

(ग) बुद्धि अगर स्वार्थ से मुक्त हो, तो हमें उनकी प्रभुता मानने में कोई आपत्ति नहीं । समाजवाद का यही आदर्श है । हम साधु-महात्माओं के सामने इसीलिए सिर झुकाते हैं कि उनमें त्याग का बल है । इसी तरह हम बुद्धि के हाथ में अधिकार भी देना चाहते हैं, सम्मान भी, नेतृत्व भी; लेकिन सम्पत्ति किसी तरह नहीं । बुद्धि का अधिकार और सम्मान व्यक्ति के साथ चला जाता है, लेकिन उसकी सम्पत्ति विष बोने के लिए उसके बाद और भी प्रबल हो जाती है । बुद्धि के बगैर किसी समाज का संचालन नहीं हो सकता । हम केवल इस बिच्छू का डंक तोड़ देना चाहते हैं ।

अथवा

संसार का ऊँच-नीच देख लेने के बाद निष्कपट मनुष्यों में जो उदारता आ जाती है, वह अब मानो आकाश

में उड़ने के लिए पंख फड़फड़ा रही है । होरी को वह अब कोई काम करते देखता है, तो उसे हटाकर खुद करने लगता है, जैसे पिछले दुर्व्यवहार का प्रायश्चित करना चाहता हो । कहता है, दादा अब कोई चिन्ता मत करो, सारा भार मुझ पर छोड़ दो, मैं अब हर महीने खर्च भेजूँगा । इतने दिन तो मरते-खपते रहे, कुछ दिन तो आराम कर लो । मुझे धिक्कार है कि मेरे रहते तुम्हें इतना कष्ट उठाना पड़े और होरी के रोम-रोम से बेटे के लिए आशीर्वाद निकल जाता है ।

'अशोक के फूल' निबंध के आधार पर हजारीप्रसाद द्विवेदी की निबंध शैली पर विचार कीजिए । 14

अथवा

'काल चक्र का चक्कर' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए ।

'उसने कहा था' कहानी की समीक्षा कीजिए । 14

अथवा

'भोलाराम का जीव' भ्रष्ट राजनीति का सशक्त उदाहरण है । स्पष्ट कीजिए ।

4. 'गोदान' उपन्यास में अभिव्यक्त यथार्थवाद – विश्लेषण कीजिए । 14

अथवा

'होरी की कथा भारतीय किसान की संघर्ष-गाथा है ।' विवेचन कीजिए ।

5. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए : 12

(क) धनिया का चरित्र-चित्रण ।

(ख) 'मजदूरी और प्रेम' निबंध का प्रतिपाद्य ।

(ग) 'यही सच है' कहानी में अभिव्यक्त द्वन्द्व ।